


सलोकु ॥
तजहु सिआनप सुरि जनहु
सिमरहु हरि हरि राइ ॥
एक आस हरि मनि रखहु
नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥14॥







असटपदी


मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥
देवन कउ एकै भगवानु ॥
जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥
बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥
मारै राखै एको आपि ॥
मानुख कै किछु नाही हाथि ॥
तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥
तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥
सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥
नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥







उसतति मन महि करि निरंकार ॥
करि मन मेरे सति बिउहार ॥
निरमल रसना अम्रितु पीउ ॥
सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥
साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥
चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥
कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥
हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥







बडभागी ते जन जग माहि ॥
सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥
राम नाम जो करहि बीचार ॥
से धनवंत गनी संसार ॥
मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥
सदा सदा जानहु ते सुखी ॥
एको एकु एकु पछानै ॥
इत उत की ओहु सोझी जानै ॥
नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥३॥





गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥
तिस की जानहु तिसना बुझै ॥
साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥
सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥
अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥
ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥
एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥
पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥





जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥

सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥

जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥

सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥

जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥


अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥

सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥

गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥

जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥

नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥





नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥

आपन चलितु आप ही करै ॥

आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥

आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि ॥

आपे आपि सगल महि आपि ॥

अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥

अबिनासी नाही किछु खंड ॥

धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥

अलख अभेव पुरख परताप ॥


आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥





जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥
सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥
प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥
प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥
आपे मेलि लए किरपाल ॥
गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥
उन की सेवा सोई लागै ॥
जिस नो क्रिपा करहि बडभागै ॥
नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥
नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥





जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥
सदा सदा बसै हरि संगि ॥
सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥
करणैहारु पछाणै सोइ ॥
प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥
जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥
ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥
आपस कउ आपि दीनो मानु ॥
नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥

